www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जन क्रान्ति के अध्वर्यु—

महापुरुष लेनिन

१००२

३३१

३८१



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक चाँद, सतयुग, प्रणवीर

युग निर्माण योजना मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जन-क्रान्ति के अध्वर्यु--महापुरुष लेनिन

रूस की राज्यक्रान्ति हो चुकी थी। वहाँ का सम्राट अपने परिवार सहित जेल के सींखचों में बन्द था। कई महीनों से वहाँ 'सोशल डैमोक्रेट दल' वालों का शासन कायम था जिसके हटाने की चेष्टा 'सोशल रिवोल्यूशनैरी' (कम्यूनिस्ट) पार्टी वाले कर रहे थे। अन्त में उनको सफलता मिली और ७ नवम्बर १९१७ को उन्होंने कुछ सेनाओं को अपने पक्ष में करके रूस की राजधानी पैट्रोग्राड पर अधिकार कर लिया। पर यह बात कहने में जितनी सरल थी करने में वैसी न थी। देश में चारों तरफ अभी क्रान्ति विरोधी लोग भरे पड़े थे जो जरा-सा भी मौका पाने पर सिर उठाने और नई सरकार का तख्ता उलट देने को तैयार थे। ऐसी अवस्था में अपनी स्थिति को जल्दी से जल्दी मजबूत बनाना क्रान्तिकारी नेताओं का कर्तव्य था। इसलिये जिस दिन कम्यूनस्ट पार्टी ने शासन-सत्ता अपने हाथ में ली उसी दिन शाम को उनके नेता लेनिन ने 'क्रान्सटेड' किले में रहने वाली सेना के अधिकारी से टेलीफोन द्वारा बातें कीं। इस बात-चीत को शार्टहैण्ड द्वारा उस समय ज्यों का त्यों लिख लिया गया था और वह क्रांतियुग की कठिन परिस्थितियों को समझने काबड़ा अच्छा साधन है। जब लेनिन के सेक्रेटरी ने टेलीफोन को 'क्रान्सटेड' से मिलाया तो एक व्यक्ति की आवाज सुनाई दी जिसने अपने को 'सोशल रिवोल्यूशनैरी' दल का मंत्री बतलाया। सेक्रेटरी ने उससे कहा—'लेनिन नवीन क्रान्तिकारी सरकार की तरफ से आपसे बातें करना चाहते हैं।"

"बहुत अच्छा, वह क्या कहना चाहते हैं?"

इस पर लेनिन ने रिसीवर अपने हाथ में लेकर कहा—"क्या आपको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थल और जल सेना की डिस्ट्रिक्ट कमेटी की तरफ से बात-चीत करने का अधिकार है ?"

क्रान्सटेड से बोलने वाले ने उत्तर दिया – "अवश्य ।"

"क्या आप शीघ्र ही समुद्र में सुरङ्ग बिछाने वाले जहाजों और रण-पोतों को पैट्रोग्राड भेज सकते हैं ?"

इसका पता जल सेना के अधिकारी से लगेगा । मैं उनको आपसे बातें करने को बुलाता हूँ ।"

'हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक जितने सैनिक आप भेज सकते हैं पैट्रोग्राड भेज दें । पर वे ऐसे हों जो हमारे दृढ़ पक्षपाती हों । ऐसे कितने आदमी आपके पास हैं ?"

"पाँच हजार, हम उनको इसी समय पैट्रोग्राड भेज सकते हैं ।"

"आपके पास जो कुछ आने-जाने के साधन मौजूद हैं, उनके द्वारा आप जल्दी से जल्दी किस समय तक सेना को यहाँ पहुँचा देने का वायदा करते हैं ?"

"चौबीस घण्टे में ।"

'क्या आपके पास लड़ाई का पूरा सरंजाम और भोजन सामग्री मौजूद है ?"

"हाँ हमारे पास खाने-पीने का बहुत-सा सामान है । यहाँ ३५६ मशीन-गनें और कुछ बड़ी तोपें भी हैं जिनको हम आपके काम के लिये भेज सकते हैं ।"

लेनिन ने खुश होकर कहा—"तब मैं आपसे सोवियट सरकार के नाम पर कहता हूँ कि आप सेना को फौरन रवाना कर दें । आप जानते हैं कि यहाँ नई सरकार की स्थापना हो गई है । इस सम्बन्ध में 'क्रान्सटेड' की स्थानीय सोवियट का भाव कैसा है ?"

"वह इस खबर को सुनकर बड़ी खुश है "

"तब आप पैदल सेना को पूरे सरंजाम के साथ बिना देर लगाये रवाना करने का इन्तजाम करें ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूसरे दिन ठीक समय पर 'क्रान्सटेड' की सेना पैट्रोग्राड आ पहुंची और उस समय से बराबर लेनिन की नई सरकार को सबसे बड़ी सहायक बनी रही।

बड़े भाई का प्राणदण्ड

जिस लेनिन (जन्म १८७०) को रूसी राज्यक्रान्ति की रक्षा की इतनी अधिक चिन्ता थी और जिसको सफल बनाने में उसने अपना जीवन दे दिया, वह सच्चे अर्थों में रूस की श्रमजीवी क्रांति का निर्माता था। उसने जब से होश संभाला निरन्तर जनता के अधिकारों और गरीबों के उद्धार की लगन उसको लगी रही। इसका एक कारण यह भी हुआ कि उसका बड़ा भाई अलैक्जैन्डर भी क्रांतिकारी था और विद्यार्थी अवस्था में ही उसने कार्लमार्क्स की एक पुस्तक का रूसी भाषा में अनुवाद किया था। सन् १८८७ में उसने जार की हत्या के षड़यन्त्र में प्रमुख भाग लिया। पकड़े जाने पर उससे अदालत के सामने कहा—"रूस के वर्तमान निरंकुशतापूर्ण शासन में गुप्त हत्याओं के सिवाय और किसी उपाय से राजनीतिक सुधार नहीं हो सकता। मुझे मृत्यु का डर नहीं है। मेरे बाद अवश्य ही अन्य लोग आगे बढ़ेंगे और एक दिन जारशाही को जड़मूल से उखाड़कर फेंक देंगे।" उस समय अलैक्जैन्डर को इस बात की कल्पना भी न होगी कि उसका छोटा भाई ही उसकी इस मनोकामना को पूरा करेगा।

पर लेनिन उस सत्तरह वर्ष की अवस्था में भी जनक्रांति के महत्त्व और शक्ति को समझता था। अपने भाई का इस प्रकार असामयिक अन्त होने से उसके हृदय को बड़ा तीव्र धक्का लगा और वह सदा के लिये जारशाही का दुश्मन बन गया। पर साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि यह षड़यन्त्र और गुप्त हत्याओं का मार्ग सही नहीं है। उस अवसर पर उसके मुंह से निकला—"नहीं, यह रास्ता ठीक नहीं है, हम इस पर चलकर सफलता नहीं पा सकते।" उसी समय से वह उस नवीन पथ का पथिक बन गया जो उसकी समझ में रूस को जार की निरंकुश सत्ता से मुक्त कराने के लिये कारगर था।

इसमें सन्देह नहीं कि किसी भी देश के स्वाधीनता आन्दोलन में उचित मार्ग चुनने का भी बड़ा महत्त्व है। यदि ऐसा न किया जाय तो प्रकट में बड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिश्रम, त्याग, कष्ट सहन करते हुए भी हम अपनी शक्ति को बर्बाद करते रहते हैं और प्रगति मार्ग पर बहुत ही कम अग्रसर हो पाते हैं । हमारे देश की हालत इस समय बहुत कुछ ऐसी ही दिखाई पड़ती है । सभी राजनैतिक कार्यकर्ता अपने-अपने रास्ते को सही और प्रभावशाली बतलाते हैं और उसके लिये एक नई पार्टी अथवा संस्था बनाकर अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं । पर वास्तव में लेनिन के समान व्यक्ति समस्त राष्ट्र में दो-चार ही होते हैं जो समय की गति को बिल्कुल ठीक समझ सकते हैं और अनुकूल विधान बना सकते हैं । हमारे देश में महात्मा गांधी इसी श्रेणी में थे और इसलिये उन्होंने असम्भव को सम्भव करके दिखा दिया ।

जैसे ही लेनिन अपने नगर को पढ़ाई समाप्त करके काजन यूनीवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त करने पहुँचा वह क्रान्तिकारी विद्यार्थियों की सभा का सदस्य बन गया । यूनीवर्सिटी के अधिकारी उससे पहले ही नाखुश थे, क्योंकि वह जार की हत्या की चेष्टा करने वाले का भाई था और यह उनकी दृष्टि में ऐसा अक्षम्य अपराध था जिसका कोई प्रायश्चित्त हो ही नहीं सकता । परिणाम यह हुआ कि उसे यूनीवर्सिटी में दाखिल हुए पूरा एक महीना भी नहीं हुआ था कि उसे समारा प्रान्त में निर्वासित कर दिया गया । इस प्रकार सत्रह वर्ष की आयु में वह पहली बार सरकार द्वारा दण्डित किया गया । समारा में उसे दो वर्ष तक रहना पड़ा और इस बीच में उसने अत्याचार पीड़ित किसानों की दशा और मनोभावों का अध्ययन किया, ग्रामों की समस्या पर मनन किया, कानून का कोर्स पढ़ा और कार्लमार्क्स के 'कैपिटल' तथा अन्य साम्यवादी ग्रन्थों का भी ध्यानपूर्वक अवलोकन किया ।

दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर लेनिन समारा से वापस आकर पीटर्सबर्ग पहुँचा और वहाँ उसने प्राइवेट तौर पर कानून की परीक्षा पास की । उसने सरकारी नियम के अनुसार वकालत भी की—पर केवल दस-बीस दिन । इस समय उसके सामने एक तरफ वकालत से खूब धन कमाने और बड़े लोगों की तरह आराम से रहने का प्रलोभन था और दूसरी ओर क्रान्तिकारी अन्दोलन में पड़कर जन्म भर दरिद्रता, कष्ट और खतरे का जीवन व्यतीत करना था ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऐसा अवसर राजनीतिक कार्यकर्ताओं के सामने प्रायः आया ही करता है। बहु-संख्यक व्यक्ति ऐसे अवसर पर निर्बलता का परिचय देकर उच्च आदर्शों से पतित हो जाते हैं। पर लेनिन अपने जीवन का लक्ष्य बहुत पहले निश्चित कर चुका था, इसलिए उसको अपना कार्यक्रम बनाने में कुछ भी कठिनाई न पड़ी। उसने बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के सुख-वैभव के मार्ग को लात मार दी और पूरी तरह से जन-आन्दोलन में कूद पड़ा।

श्रमजीवी आन्दोलन

लेनिन का सम्बन्ध यद्यपि आरम्भ से ही क्रान्तिकारी दल से था और उसके बड़े भाई के बलिदान के कारण भी उस दल के प्रमुख व्यक्ति उसको अपना साथी मानते थे। पर जैसे ही उसने मजदूरों के सङ्गठन की बात मुँह से निकाली उस पर चारों तरफ से आक्षेप होने लगे। वह जिस किसी क्रान्तिकारी से मार्क्स के सिद्धान्तों के अनुसार काम करने को कहता वही उसे मूर्ख और स्वप्न देखने वाला बताता। ऐसे लोगों का कहना था कि रूस कृषि प्रधान देश है और यहाँ मजदूरों की तादाद बहुत थोडी है। इसलिये इस देश में मार्क्स के सिद्धान्तों के अनुसार काम किया जा सकना सम्भव नहीं।

पर लेनिन इस प्रकार मे न तो घवड़ाया और न अपने मार्ग मे विचलित हुआ। उसने पीटर्सवर्ग के कुछ समझदार मजदूरों को तलाश करके उनको अपना साथी बनाया और 'श्रमजीवियों के उद्धारक संघ' की स्थापना की। इन्हीं दिनों उसने कारखानों में मजदूरों पर होने वाले जुर्माने के सम्बन्ध में एक पुस्तिका प्रकाशित कराई। इसमें बतलाया गया था कि किस प्रकार छोटे-छोटे इलजामों पर मजदूरों की पूरे महीने की तनख्वाह जब्त करली जाती है। किस प्रकार दिन के समय फाटक से बाहर जाने, मालिक से रुपया माँगने, दस-बीस मिनट देर से आने पर भारी-भारी जुर्माने किये जाते हैं। लेनिन की यह पुस्तिका भी सदा की भांति अत्यन्त सीधी भाषा में सरल ढङ्ग से लिखी गई थी और अशिक्षित मजदूर भी उसे भली प्रकार समझ सकते थे। इसलिये सभी श्रमजीवियों ने उसे बहुत पसन्द किया और वे उसके प्रशंसक बन गये। लेनिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मजदूरों के अन्य कष्टों, जैसे ओवरसियरों द्वारा मजदूरों के पीटे जाने, पीने के लिये पानी की कमी, अधिक समय तक काम कराये जाने आदि के सम्बन्ध में भी आन्दोलन करता था। उसने ऐसी शिकायतों के पर्चे मिट्टी से बने लेथो प्रेस में छपवाकर गुप्त रीति से कारखानों में बाँटे। यद्यपि जमाने के बदल जाने से आज हमको ये बातें बहुत साधारण जान पड़ती हैं, पर उस समय इन्हीं उपायों से लेनिन ने एक बिल्कुल नये और विशाल आन्दोलन की जड़ जमा दी।

कारखानों में दोपहर को छुट्टी के समय लेनिन नियमपूर्वक मजदूरों के क्लबों में जाकर व्याख्यानों द्वारा उनमें अपने सिद्धान्तों का प्रचार करता था। शाम के समय छुट्टी होने के बाद भी वह उनसे मिलता था और उनके कारखानों के हाल चाल, निजी जीवन और साथियों के सम्बन्ध में पूछताछ करता था। इस प्रकार वह सदा श्रमजीवियों की वास्तविक दशा का पता लगाने में सचेष्ट रहता था। मजदूरों के जीवन की नित्य-प्रति की घटनायें ही उसके लिये तर्कों और दलीलों का काम देती थीं और इनके द्वारा उसके व्याख्यानों का जो प्रभाव पड़ता था वह बड़े-बड़े ग्रन्थों के सैकड़ों प्रमाणों से भी बढ़कर होता था। वह अपने श्रोताओं से सदा उन्हीं की बोली में बातें करता था और अन्य व्याख्यानदाताओं की तरह लच्छेदार साहित्यिक भाषा से काम नहीं लेता था। इस कारण उसके श्रोताओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी और वे उसे अपना सच्चा हितैषी मानने लगे।

कुछ समय पश्चात् लेनिन ने जर्मनी की यात्रा का निश्चय किया जिससे वहाँ के श्रमजीवी आन्दोलन और मजदूर-मण्डलों के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर सके और उसके आधार पर रूस में भी श्रमजीवी आन्दोलन को सुदृढ़ बना सके। जर्मनी में वह वहाँ के नेताओं से मिला, श्रमजीवियों की सभाओं में सम्मिलित हुआ, व्याख्यान सुने, संगठन-प्रणाली को अच्छी तरह समझा और अन्त में उसे विश्वास हो गया कि वह भी किसी दिन इसी प्रकार स्वतन्त्र रूप में रूस के श्रमजीवी दल का सञ्चालन कर सकेगा।

जर्मनी से जेनेवा जाकर वह रूस के निर्वासित श्रमजीवी नेता प्लेखनोव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से मिला। वह रूस का सबसे पहला श्रमजीवी क्रान्तिकारी नेता था। उसने सबसे पहला क्रान्तिकारी भाषण जो ६ दिसम्बर १८७६ को पीटर्सबर्ग की एक सड़क पर दिया था। उसके हाथ में लाल झण्डा था जो उस समय वहाँ एक नई चीज थी। यह झण्डा क्रान्ति का सन्देश वाहक था। पुलिस नये रङ्ग को देखकर चौकन्नी हो गई और उसने डण्डा चलाकर भीड़ को हटा दिया प्लेखनोव भी रूस के पुराने क्रान्तिकारी दल नैरोडार्नकी' का सदस्य था, पर उसके विचार गुप्त-हत्याओं के विरुद्ध थे। उसकी सम्मति में इस तरीके से थोड़े से फल के लिये बहुत बड़ा बलिदान करना पड़ता था। उपर्युक्त घटना के कुछ ही समय बाद वह विदेश चला गया और वहीं से एक पैम्फलेट प्रकाशित करके रूस में श्रमजीवी क्रान्ति का प्रतिपादन किया।

प्लेखनोव से मिलकर लेनिन को बड़ा सन्तोष हुआ, क्योंकि इस समय रूस में उसके श्रमजीवी-कार्यक्रम का समर्थन करने वाला कोई बड़ा नेता न था। इधर प्लेखनोव और उसके सहकारियों पर भी लेनिन के व्यक्तित्व का बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने उसमें वह सचाई और व्यावहारिकता देखी जो दूसरे लोगों में नहीं पाई जाती थी। प्लेखनोव के पास रूस के इस तरह के क्रान्तिकारी हमेशा आते रहते थे, पर वे सब या तो किताबों में लिखी बातों को तोते की तरह रट लेने वाले होते थे या मनमाने काल्पनिक सिद्धान्तों के मानने वाले। उस समय लेनिन को देख प्लेखनोव के मित्र मार्टोव के मन में जो धारणा हुई वह उसने किसी लेख में इस प्रकार प्रकट की थी:—

"प्लेखनोव और मैं बहुत दिनों से मार्क्स के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे थे, पर अभी तक हमको कुछ भी सफलता प्राप्त नहीं हुई थी। थोड़ी से साम्यवादी हमसे भेंट करने को रूस से आया करते थे, वे ही हमारे समर्थक थे। पर उनका राजनीतिक ज्ञान इतना अल्प था कि उनसे किसी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ था। इसलिए जब तक लेनिन से हमारा साक्षात्कार न हुआ तब तक हमको सदा चिन्ता ही बनी रही। इतने दिनों बाद उसे देखकर हमने आपस में कहा कि अब रूस का श्रमजीवी अन्दोलन मजबूत हाथों में पहुँच गया। अब उसे एक ऐसा व्यवहार कुशल नेता प्राप्त हो गया जो उसके योग्य है।" यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्मरण रखना चाहिये कि उस समय लेनिन की अवस्था केवल २५ वर्ष की थी। अर्थात् जिस आयु में हमारे नवयुवक प्रायः कालेज की साधारण पढ़ाई और फैशन, मनोरञ्जन, सैर-सपाटा अथवा अन्य हानिकारक व्यसनों में संलग्न रहते हैं, लेनिन ने देशव्यापी महत्त्व प्राप्त कर लिया था और भविष्य में उसकी महान् सफलताओं की सम्भावना बड़े-बड़े अनुभवी नेता भी प्रकट करने लगे थे। यद्यपि लेनिन को आगे चल कर बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में जीवन व्यतीत करना पड़ा, पर अपनी सत्यनिष्ठा के बल से अन्त में उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।

गुप्त प्रेस और अखबार

विदेश से लौटने पर अपने दल के प्रचार कार्य तथा सङ्गठन को मजबूत बनाने के लिए लेनिन को एक अखबार की आवश्यकता जान पड़ी। रूस की सीमा के भीतर ऐसा अखबार प्रकट रूप से निकाल सकना सर्वथा असम्भव था। इसलिये पीटर्सबर्ग के बाहर मजदूरों की बस्ती में एक गुप्त छापाखाना खोला गया। जिस मकान में यह छापाखाना था उसका बाहरी दुनिया से कोई भी सम्बध न था। हम अपने देश के तपस्वियों की बातें सुनते रहते हैं जो गर्मी में कुछ घण्टे धूनी तप लेते हैं या व्रत आदि करके काया कष्ट सहन करते हैं। पर इस मकान में जो लोग रहते थे वे बिना किसी प्रकार के लाभ की आशा के दिन रात परिश्रम तो करते ही थे, उनको सदा उसी एकान्त स्थान में बन्द रहकर ही महीनों और वर्षों का समय गुजारना पड़ता था। वे न कभी सूर्य के प्रकाश के दर्शन कर पाते थे न प्रकृति के सुन्दर दृश्यों को देख सकते थे। उनको सदा सीसे के कणों से भरी गन्दी हवा में साँस लेना पड़ता था जिसका कुप्रभाव स्पष्टतः स्वास्थ्य पर पड़ता था। उनको इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता था कि पड़ोसियों को उनपर किसी प्रकार का शक पैदा न हो जाय। इसलिये वे अपनी ऊपरी रहन-सहन भले आदमियों की तरह रखते थे। कागज के बंडल चुपके से मकान के भीतर खींच लिये जाते थे और छपे हुए अखबार भी उसी तरह बिना जरा भी शब्द किये सड़क पर पहुंचा दिये जाते थे। लेनिन अखबार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की एक-एक लाइन को ध्यानपूर्वक देखता था। उसे इस कार्य में पड़ने वाली प्रत्येक कठिनाई का पूरी तरह ज्ञान था और वह उसको हल करने का उपाय करता रहता था।

मरकार से मुठभेड़

जिस समय लेनिन ने रूस के श्रमजीवियों के संगठन का कार्य आरम्भ किया उस समय इस आन्दोलन की क्या दशा थी और उसने किस प्रकार धीरे-धीरे उसकी शक्ति बढ़ाई इसका वर्णन लेनिन की पत्नी क्रुप्सकाया ने जो स्वयं भी पहले से क्रान्तिकारी आन्दोलन की सदस्या थी, "लेनिन की स्मृतियाँ" नामक पुस्तक में बड़े रोचक ढंग से किया है—

"लेनिन सन् १८९३ में पीटर्सबर्ग आया। उस समय मेरा उससे परिचय न था। मैंने सुना था कि 'बोलगा' प्रान्त से मार्क्स का एक शिष्य आया है। कुछ महीनों बाद एक उत्सव में मेरी उससे भेंट हुई पर उस समय भी कोई विशेष बात नहीं हो पाई। सन् १८९४ के अन्तिम महीनों में वह पीटर्सबर्ग की श्रमजीवी वस्ती में जाकर प्रचार कार्य किया करता था। मैं भी वहीं पर एक स्कूल में अध्यापिका थी, इसलिये मुझे श्रमजीवियों के जीवन का काफी पता था। प्रत्येक रविवार को लेनिन अपने गुप्त-दल के सदस्यों के सामने भाषण देकर लौटते समय मेरे पास आता और हम लोगों में श्रमजीवी आन्दोलन के सम्बन्ध में बहुत सी बातें होती रहती थीं।"

"हम लोगों को श्रमजीवियों के साथ अधिक मिलते-जुलते देख कर पुलिस को सन्देह होगया और हम पर निगरानी रखने लगी। इससे बचने के लिये हमको भी चालाकी से काम लेना पड़ता था। लेनिन इस काम में बड़ा दक्ष था। उसे उन तमाम मकानों का पता था जिनमें दो तरफ होकर निकलने के रास्ते थे। वह पुलिस के जासूसों को आँखों में धूल झोंकने की बीसियों तरकीबें जानता था। उसने हमको किताबों के भीतर अदृश्य स्याही से अथवा अक्षरों के नीचे बिन्दु लगाकर चिट्ठियाँ लिखना सिखलाया। उसी ने हम लोगों के नकली नाम रखे। जब पुलिस वाले हमारा पीछा बहुत अधिक करने लगे तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेनिन ने कहा कि हममें से एक व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी के बाद काम करने को चुन लेना चाहिए, जिसे सब बातों का भेद मालुम हों। उस समय राजनैतिक दृष्टि से मैं सबसे अधिक विश्वस्त समझी गयी और इसलिये लेनिन की सहकारी नियत की गई।"

"सन् १८९५ के आरम्भ में जब लेनिन विदेश से लौटकर आया तो पुलिस के जासूस दिन-रात उसका पीछा करने लगे। मुझे इसका पता अपनी चचेरी बहन से लगा और मैंने लेनिन को इसकी खबर दी। अब वह और भी सावधानी से काम करने लगा। विभिन्न स्थानों के आन्दोलन के लिये पृथक् दल बनाये गये। इसी समय मजदूरों में प्रचार के गुप्त पर्चे निकालने का निश्चय किया गया। आरम्भ में ये पर्चे हाथ से लिखकर निकाले जाते थे, जिनको मजदूरों ने बहुत पसन्द किया।

लेनिन की गिरफ्तारी

९ दिसम्बर १८९५ को लेनिन गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस उसे बहुत दिनों से पहचानती थी, पर उसे उसका खानदानी नाम 'ब्लैडीमिर उलियानोव' ही मालुम था। नये नाम लेनिन का उसे पता न था। अन्त में उसने अनुमान किया कि कारखानों में यह अनुमान किया गया कि वहाँ में जो असंख्यों पर्चे बाँटे जा रहे हैं उनका लेखक लेनिन और यह 'उलियानोव' एक ही व्यक्ति है। इसी आधार पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। पर उसने जेल में पहुँचकर भी अपना काम बन्द नहीं किया। हवालाती कैदियों को बाहर से इच्छानुसार पुस्तकें मंगाकर पढ़ने की सुविधा थी। वह जेल में पुस्तकें मंगाकर और उनके अक्षरों के नीचे बिंदु लगा कर अपना सन्देश बाहर वाले कार्यकर्ताओं को भेजता रहता था। वह दूध से लिखी हुई चिट्ठियाँ भी भेजा करता था। जेल वालों को तो उनमें कुछ दिखाई न देता था पर उसके साथी उनको गरम पानी में डुबाकर मतलब की बात मालूम कर लेते थे। चिट्ठी लिखते समय पकड़ में न आ सके इसके लिये रोटी को दवात में दूध भरकर लिखा करता था। जैसे ही कोई दरवाजा खोलता वह दवात को मुँह में रख लेता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसने एक बार लिखा था कि आज मैंने छः दवातें निगलीं। कुछ दिनों बाद उसे छोड़ दिया गया क्योंकि पुलिस उसके खिलाफ कोई अभियोग सिद्ध न कर सकी।

साइबेरिया में निर्वासन

इसके कुछ समय बाद पीटर्सबर्ग के कपड़ा बनाने वाली मिलों के पैंतीस हजार मजदूरों ने अकस्मात् हड़ताल कर दी। उनकी माँग थी कि काम करने के घण्टे १३ से घटाकर १०।। कर दिये जायें। एक बार तो पुलिस के दमन तथा अधिकारियों के झूँठा वायदा कर देने से मजदूर काम पर लौट गये, पर जब वायदा पूरा न किया गया तो हड़ताल पुनः आरम्भ की गई। काम करने के घण्टे १३ से घटाकर ११।। कर दिये गये।

लेनिन और उनकी गुप्त सभा ने इस अवसर पर काफी प्रचार-कार्य किया और जोशीले पर्चों द्वारा मजदूरों के उत्साह को काफी समय तक कायम रखा। इसके परिणामस्वरूप एक हजार मजदूरों के साथ लेनिन को भी गिरफ्तार किया गया और कोई खास अपराध सिद्ध न होने पर भी तीन वर्ष के लिये साइबेरिया में निर्वासन का दण्ड दिया। उच्च न्यायालय के जजों ने अपने फैसले में कहा कि ऐसे असाधारण विचार वाले व्यक्तियों का जनता के बीच रहना अवांछनीय है, उनके लिये उपयुक्त निवास स्थान साइबेरिया का बर्फिस्तान ही है। इस आदेश के अनुसार उसे शुसेनिस्क नामक गाँव में जाकर नजरबन्दी का जीवन बिताना पड़ा। यह स्थान पीटर्सबर्ग से कई हजार मील के फासले पर रूस और चीन की सीमा पर और सभ्य जगत् से बिल्कुल बाहर घोर जंगली और सुनसान इलाके में अवस्थित था।

साइबेरिया उस जमाने में रूस का 'काला पानी' समझा जाता था। जारशाही का विरोध करने वाले राजनैतिक कैदियों को प्रायः वहीं पर सजा भोगने के लिये भेजा जाता था। निर्वाह सम्बन्धी कठिनाइयों और एकान्त में रहने के कारण सैकड़ों व्यक्ति पागल हो जाते थे। अनेक लोग जेलों में दिये जाने वाले कष्टों के कारण आत्महत्या की चेष्टा में अपने को घायल कर लेते थे, कितने ही जीवित जल जाते थे, कितने ही भूखों रहकर मर जाते थे और कितने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही जेल के अधिकारियों पर हमला करके उनके हाथों प्राण दे देते थे । इस प्रकार के असंख्यों बलिदानों और आन्दोलनों के पश्चात् इनकी दशा में कुछ सुधार हुआ और एक सीमित क्षेत्र के भीतर आने-जाने की अनुमति उनको दी जाने लगी ।

शुसेनिस्क के एक छोटे से घर में लेनिन नजरबन्दी का जीवन व्यतीत करने को पहुँचा । वहाँ ठण्ड इतनी अधिक पड़ती थी कि रात के समय शरीर का खून जम-सा जाता था । कुत्तों के भौंकने से अच्छी तरह नींद आ सकना असम्भव था । रास्ते सुनसान पड़े रहते थे और उनमें आदमियों के बजाय सूअर, बतखें और अन्य जानवर ही अधिक दिखलाई पड़ते थे । वहाँ के असली निवासी बिलकुल जंगली थे और उनका जीवन अपरिवर्तनशील था । ऐसे एकांत स्थान में जहाँ बात करने को एक भी प्राणी न हो और न जहाँ कोई सुख-दुःख का हाल पूछने वाला हो, एक शिक्षित और सभ्यता की गोद में पले व्यक्ति का जीवन असहनीय हो जाना स्वाभाविक ही था । पर लेनिन के दिमाग में इतने अधिक विचार भरे हुए थे और उसे अध्ययन की इतनी प्रबल आकांक्षा थी कि वह अपना तमाम वक्त इसी में खर्च कर देता था। इस लिये जिस प्रकार अन्य राजनैतिक कैदी वहाँ मर-खप जाते थे वैसी कोई घटना लेनिन के साथ नहीं हुई, वरन् उसने वहाँ रहते हुए दो उपयोगी पुस्तकें लिखीं जो आगे चल कर श्रमजीवी आन्दोलन के कार्यकर्ताओं के लिये बड़ी प्रेरणादायक सिद्ध हुईं । इस प्रकार उसने अपने उदाहरण से सिद्ध कर दिया कि मनस्वी और कर्मठ व्यक्ति किसी भी दशा में क्यों न रहे वह समाज-सेवा का कोई-न-कोई उपयोगी कार्य कर ही सकता है ।

निर्वासन में पत्नी का सहयोग

शुसेनिस्क में लेनिन के पहुँचने के कुछ समय बाद उसकी पत्नी क्रुप्स्काया भी अपनी माँ के साथ वहीं पर आ गई । हड़ताल के सम्बन्ध में उसको 'उफा' प्रान्त में तीन साल के निर्वासन का दण्ड दिया गया था, पर जब उसने कहा कि लेनिन के साथ मेरा विवाह-सम्बन्ध निश्चित हो चुका है तो उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शुसेनिस्क में रहने की आज्ञा मिल गई। रूस के अधिकांश क्रांतिकारियों की भाँति इन दोनों की शादी भी हुई थी। क्रांतिकारी दल में जिन दो युवक युवतियों के विचार परस्पर में मिलते हुए होते थे वे अपनी एक 'मण्डली' बना लेते थे। धीरे-धीरे उनमें घनिष्ठता होती जाती थी और एक दिन अकस्मात् उनको पता लगता था कि वे पति-पत्नी बन गये। अनेक क्रान्तिकारी युवक-युवतियाँ धोखा देने के लिये या घर वालों से छुटकारा पाने के लिये अपने को पति-पत्नी बतला देते थे, यद्यपि उनमें आजन्म इस प्रकार का कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं होता था।

क्रुप्सकाया के पहुंचने पर लेनिन का जीवन-क्रम अधिक व्यवस्थित हो गया। क्योंकि ये दोनों माँ बेटी घर की व्यवस्था कर लेती थीं और लेनिन को अध्ययन और लिखने-पढ़ने का काम करने का पूरा अवसर मिल जाता था। वह यहाँ रहकर भी रूस के श्रमजीवी आन्दोलन और राजनीतिक परिवर्तनों का पता रखता था। वह गुप्त रूप से अपनी कमेटी वालों को हिदायतें देकर आन्दोलन को जीवित रखे हुए था, यद्यपि समय-समय पर कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के कारण वह अव्यवस्थित ढङ्ग से ही चल पाता था। तो भी इसका यह परिणाम हुआ कि जब तीन वर्ष बाद वह निर्वासन से लौटकर आया तो उसे काम आरंभ करने में अधिक समय बर्बाद न करना पड़ा। वहीं पर उसने रूस के श्रमजीवी आन्दोलन को ठीक से चलाने के लिये एक नियमित अखबार निकालने की योजना भी बनाई।

लेनिन ने जो कानून का अध्ययन किया था वह 'शुसेनिष्क' में कार-आमद हुआ। वह फुरसत के समय में वहां के किसानों, मजदूरों आदि से मिलता रहता था और उन्हें मुकदमों तथा अन्य शिकायतों के सम्बन्ध में सलाह-मशविरा दिया करता था। इससे वह लोगों में 'वकील' के नाम से मशहूर हो गया और दूर-दूर के किसान उससे सलाह लेने के लिये आने लगे। इससे अनेक लोगों का बड़ा उपकार हो जाता था और वे सरकारी कर्मचारियों के अन्याय से बच जाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विदेश से क्रान्तिकारी पत्र का प्रकाशन

सन् १९०० में जब लेनिन निर्वासन से लौटकर आया तो फिर श्रमजीवी आन्दोलन में लग गया। पर उसे उचित मार्गदर्शन के अभाव से चारों ओर मतभेद और दलबन्दी के दर्शन हुए। सब लोग बड़े जोरदार भाषण देते थे और तरह-तरह की योजनायें तैयार करते थे, पर इस बात का पता किसी को न था कि काम कैसे शुरू किया जाय! पर लेनिन ऊपरी जोश से अलग रहकर परिस्थिति का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कर रहा था। वह रात-रात भर षडयन्त्रकारियों की मीटिंग में सम्मिलित होकर बाद विवाद में भाग लेता था, पर सुबह जब वह वहाँ से बाहर निकलता तो पुलिस के किसी जासूस को उस पर जरा भी शक नहीं होता था। क्योंकि उसमें उन चिन्हों में से एक भी दिखलाई नहीं देता था, जो प्रायः क्रान्तिकारियों में पाये जाते थे। उसके सर पर न तो बालों का गुच्छा-सा था, न उसके हाथ में कागजों से भरा हैण्डबैग लटकता रहता था, न वह लम्बा-सा चुगा पहिनता था और न उसमें कोई अन्य सनकीपन की बात देखने में आती थी। वह ठीक वैसा ही दिखलाई पड़ता था जैसा कि रूस का एक साधारण भला आदमी।

थोड़े ही दिनों में लेनिन को मालूम हो गया कि वह पीटर्सबर्ग में रहकर कोई काम नहीं कर सकता। आपस का मतभेद और विभिन्न विचार वालों के नेतृत्व के झगड़े इतने बढ़ गये थे कि किसी उपयोगी आन्दोलन का चल सकना असम्भव था। इसलिये उसने उस क्रान्तिकारी अखबार को प्रकाशित करने की योजना में ही लग जाना ठीक समझा जिसकी योजना निर्वासन काल में उसके दिमाग में आ चुकी थी। इस प्रकार का अखबार रूस की सीमाओं के भीतर निकाला ही नहीं जा सकता था, क्योंकि यहाँ पग-पग पर सरकार और उसकी पुलिस की बाधा मौजूद थी जिससे कोई व्यक्ति निश्चित भाव से पत्र का कार्य कदापि नहीं कर सकता था।

इसके पहले भी अनेक लोगों ने विदेश से ऐसे पत्र निकाले थे, पर वे शीघ्र ही बेकार और बन्द हो गए। कारण यह था कि वे लोग रूस से अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध कायम रख सकने में असमर्थ हो गये। इसलिये लेनिन ने निश्चित किया कि पत्र को आरम्भ करने से पहले रूस में एक ऐसा सङ्गठन बनाया जाय, जिसके द्वारा नियमित रूप से वहां की खबरें मिलती रहें और अखबार के बाँटे जाने का पक्का प्रबन्ध हो सके। यद्यपि उसका विचार उसे विदेश में छपाने का था, पर उसके लिये ऐसी व्यवस्था बनाना चाहता था कि जिससे मालूम हो कि वह पोटर्स वर्ग से प्रकाशित होता है।

इस उद्देश्य से 'स्कोव' नामक कस्बे में लेनिन के दल के लोगों की एक कान्फरेंस की गई जिसमें पत्र को प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। उसका नाम 'इस्क्रा' (चिनगारी) रखा गया। निश्चय हुआ कि उसकी नीति बिल्कुल स्पष्ट रहेगी और प्रत्येक अङ्क पर यह मोटो (आदर्शवाक्य) छापा जायगा। "फ्राम वी स्पार्क शैल स्प्रिङ्ग दी फ्लेम" (चिनगारी से अग्नि की ज्वाला उत्पन्न होगी।)

स्कोव से लौटकर लेनिन जैसे ही पाटर्सवर्ग के स्टेशन पर उतरा पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसके कोट के भीतरी गुप्त जेब से दो हजार रूबल के नोट और तमाम कागज पत्र बरामद हुए। पर यह कागज अदृश्य स्याही से लिखे हुए थे और उसके ऊपर उस चतुर क्रांतिकारी ने पहले से ही एक धोबी खाना खोलने का हिसाब और बहुत सी इधर-उधर की बातें पुलिस को धोखे में डालने को लिख रखी थीं। इसलिये उसके विरुद्ध कोई अभियोग न चल सका और उसे एक सप्ताह तक हवालात में रखकर छोड़ दिया गया। वह एक सप्ताह राजधानी और ठहरा और फिर नकली पासपोर्ट की सहायता से प्रेग (हंगरी) होता हुआ म्यूनिच (जर्मनी) जा पहुंचा। इस तरह रूस की निरंकुश सरकार की सख्तियों के कारण एक देश निकाला समाप्त होने पर लेनिन को स्वेच्छा से दूसरा देश निकाला लेना पड़ा।

'इस्क्रा' का प्रथम अङ्क सन् १९०० के अन्तिम महीनों में बड़ी धूमधाम से निकला। उसके सम्पादक-मण्डल में प्लेखनोव आदि पाँच रूसी नेता और थे जो उसके लिए महत्वपूर्ण सामग्री तैयार करने में सहयोग देते थे। उसको रूस की सीमा के पास तक पहुँचाने में जर्मनी के क्लारा जेटकिन आदि कई श्रम-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जोवी नेताओं ने सहायता दी। वहाँ पर उनको दुहरे पेंदे वाले बक्सों में छुपाकर रखा गया और निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचा दिया गया।

जैसे ही 'इस्क्रा' रूस पहुँचा उसका प्रचार आग की तरह बढ़ने लगा और चारों तरफ उसमें प्रकाशित विषयों की चर्चा होने लगी। कुछ लोगों ने रूस के भीतर भी गुप्त छापेखानों से 'इस्क्रा' नाम से पर्चे प्रकाशित करने शुरू कर दिये जिसमें लेनिन के 'इस्क्रा' के लेखों के सिवा स्थानीय ताजा समाचार भी रहते थे। इस सङ्गठन के समस्त सूत्र लेनिन की पत्नी क्रुप्सकाया के हाथ में थे। वह गुप्त पत्र-व्यवहार करती थी, सूचनायें भेजती थी, खबरों की फायल बनाकर के रखती थी और समस्त 'क्रान्तिकारी यूनियनों' का सम्बन्ध केन्द्रीय-सङ्गठन से ही कायम रखती थी। इस प्रकार घोर परिश्रम करके उसने लेनिन की इस महत्त्व-पूर्ण और पेचीदा योजना को कार्य रूप में परिणत कर दिखाया। रूस में महिला क्रान्तिकारियों की संख्या अन्य देशों की अपेक्षा बहुत अधिक रही है, पर क्रुप्सकाया ने लगभग अज्ञात रहकर जितना महान् कार्य किया उसके उदाहरण थोड़े ही मिलेंगे।

गरीबी का जीवन

जिस समय लेनिन ने विदेश यात्रा की, क्रुप्सकाया उसके साथ न जा सकी क्योंकि उसका निर्वासनकाल अभी पूरा नहीं हुआ था, इसलिये उसे उफा' में ही रहना पड़ा। जब उसने छुटकारा पाया तो अपनी माँ के साथ पीटर्सबर्ग के लिये रवाना हुई। रास्ते में मास्को ठहर कर उसने लेनिन की माँ से भेंट की जिसे वह हृदय से प्यार करती थी। पीटर्सबर्ग कुछ समय ठहर कर और वहाँ के काम की व्यवस्था जमाकर वह अकेली 'प्रेग' के लिए रवाना हुई। उसके पास लेनिन के जितने पत्र पहुँचे थे वे प्रेग के 'मोड्रक' नामक व्यक्ति द्वारा भेजे गये थे। इसलिये उसका ख्याल था कि वह उसी जगह छुपकर रहता होगा। प्रेग में उसे मालूम हुआ कि मोड्रक किसी अन्य व्यक्ति का नाम है और लेनिन रिटमियर के नाम से म्यूनिच में रहता है। वह म्यूनिच पहुँची और रिटमियर का पता लगाती हुई एक शराब के होटल में पहुँची और कहा कि अपने पति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'रिटमियर' से मिलना चाहती हूँ। होटल वाला बड़ा चकराया क्योंकि रिटमियर उसी का नाम था। इतने में होटल वाले की पत्नी आ गई और उसने सब बातें सुनकर कहा कि ये सम्भवतः मि० मेयर की पत्नी हैं जो पीछे की तरफ रहते हैं। वह उसे भीतर लिवाकर ले गई जहाँ एक छोटे से कमरे में बैठा लेनिन कुछ लिख रहा था। उसे देखकर क्रुप्सकाया की परेशानी दूर हुई और कुछ गुस्से में कहा—"भले आदमी! तुमने भी यह भी नहीं लिखा कि किस कोने में छिपे हुए हो।

लेनिन ने कहा—"तुम क्या कहती हो? मैं तुमको तलाश करने दिन में तीनबार स्टेशन जाता हूँ। तुम आईं किस तरफ से हो? बाद में मालूम हुआ लेनिन ने म्यूनिच के पते से क्रुप्सकाया को कई पत्र लिखे थे, पर जिस व्यक्ति को पहुँचाने का भार दिया गया था उसने लापरवाही से उनको यों ही पड़ा रहने दिया।

लेनिन और उसके दोनों साथियों—'मारटोव' तथा 'पैट्रोसोवन' ने म्यूनिच में नाम बदल कर गुप्त रूप से रहने का निश्चय किया था। इस उपाय से वे अन्य रूसियों से अलग रहकर अपना काम अधिक सुरक्षित रूप से कर सकते थे। लेनिन हर रिटमियर के होटल में 'मेयर' के नाम से रहता था। यह रिटमियर पक्का साम्यवादी था और लेनिन के भेद को हर तरह से गुप्त रखता था।

अनेक लोगों की आदत होती है कि वे हर एक राजनीतिज्ञ पर जनता के धन पर मौज उड़ाने का आरोप लगाते रहते हैं और वास्तव में कुछ लोग सार्वजनिक धन का इस प्रकार दुरुपयोग करने वाले भी होते हैं। पर लेनिन ने आजीवन जन-आन्दोलन में घोर परिश्रम किया, फिर भी सदा गरीबी का जीवन बिताया। जब वह रूस जैसे महान् देश का कर्त्ताधर्त्ता-बन गया तब भी वह बहुत मामूली भोजन पर ही निर्वाह करता था। क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में तो जब पैट्रोग्राड में खाद्य पदार्थों का अभाव होने से राशन-प्रथा जारी थी, लेनिन दूसरों के बराबर ही रोटी लिया करता था जिससे उसे महीनों तक भूखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहकर ही जीवन निर्वाह के लिए सोलह और अठारह घण्टा प्रतिदिन काम करना पड़ता था।

म्यूनिच में भी लेनिन को गरीबी का ही जीवन बिताना पड़ता था। होटल में उसे एक छोटा-सा कमरा मिला था जिसके पीछे एक लम्बा-चौड़ा और गन्दा आँगन था। उसमें सदा छोटे-छोटे लड़के चीखते-चिल्लाते रहते थे और गृहकार्य में व्यस्त मजदूर स्त्रियां इधर से उधर जाती रहती थी। लेनिन दोपहर के समय एक जर्मन महिला के यहाँ भोजन कर लेता था, जो उसे प्राय; दलिया या इसी तरह की कोई दूसरी चीज खाने को दिया करती थी। सुबह और शाम के वक्त वह खुद अपने लिया चाय बना लेता था। शाम को सिर्फ चाय और डबल रोटी खाकर रह जाता।

क्रुप्सकाया के आने के बाद लेनिन ने होटल छोड़ दिया और एक जर्मन श्रमजीवी के साथ माके में किराये का मकान लेकर रहने लगा। क्रुप्सकाया 'इस्क्रा' का प्रबन्ध करने के सिवाय खाने-पकाने का काम भी स्वयम् ही करती थी। लेनिन का अधिकांश समय "कहां से कार्यारम्भ किया जाय?" (व्हिअर टू बिगिन) नामक पुस्तक के लिखने और 'इस्क्रा' का सम्पादन करने में खर्च होता था।

लेनिन की कार्य प्रणाली

लेनिन की कार्य प्रणाली रूस के अब तक के अन्य क्रान्तिकारियों से भिन्न प्रकार की थी। वे लोग अधिकांश में छुपकर बम फेंकने अथवा जारशाही को बुरा-भला कहने में ही अपनी शक्ति गंवाया करते थे। पर लेनिन एक कुशल सेनापति की तरह शत्रु से खुले मैदान में युद्ध करने के लिये एक सर्वांगपूर्ण कार्य-क्रम बना रहा था और साथ ही अपने सैनिकों की संख्या भी बढ़ाता जा रहा है। इसी उद्देश्य से उसने "कहाँ से कार्यारम्भ किया जाय?" को लिखा था। यह इतनी महत्त्वपूर्ण पुस्तक थी कि लोग उसे रूस की राज्यक्रान्ति की प्राइमर कहने लगे थे। इस्क्रा के पहले ही अङ्क में लेनिन ने अपनी कार्य प्रणाली का निर्देश इन शब्दों में किया था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"हमको ऐसे कार्यकर्त्ता तैयार करने चाहिये जो आन्दोलन सम्बन्धी कार्य में सिर्फ छुट्टी के समय ही भाग न लें वरन् अपना समस्त जीवन उसी में लगा दें। हमको एक ऐसे विशाल संगठन का निर्माण करना है जिसमें सब प्रकार के कार्य अलग-अलग व्यवस्थापूर्वक विभाजित कर दिये गय हों। इस समय तक जितनी राजनीतिक वृद्धि हो चुकी है, उससे हम भली प्रकार समझ सकते हैं कि बिना दस योग्य नेताओं के—योग्य नेता सैकड़ों की संख्या में उत्पन्न नहीं हुआ करते—जिनकी सचाई प्रमाणित हो चुकी हो, अपने कार्य का पूर्ण अनुभव रखते हों और जो वर्षों तक काम करने का अभ्यास कर चुके हों, कोई जोरदार आन्दोलन नहीं चलाया जा सकता।"

उपर्युक्त कथन पर कुछ लोग यह आक्षेप कर सकते हैं कि इस प्रकार के थोड़े से नेताओं को पकड़ कर आन्दोलन को खत्म कर देना तो सरकार के लिये सहज होगा, अतः यह सिद्धान्त-जन आन्दोलन के विरुद्ध है। इसका समाधान करते हुए लेनिन ने लिखा था—

"सम्भव है कि साधारण बुद्धि के व्यक्ति इस एतराज को सच ही मान लेंगे। पर मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि दस योग्य मनुष्यों को पकड़ सकना जितना कठिन है उतना कठिन सौ मूर्खों को पकड़ना नहीं है। मैं सदा इस सिद्धान्त पर अटल रहूंगा चाहे दूसरे लोग इसको 'प्रजातन्त्र विरोधी' कहकर जनता को मेरे विरुद्ध कितना भी क्यों न भड़कावें। योग्य व्यक्तियों से मेरा आशय उन्हीं लोगों से है जो एकमात्र आन्दोलन सम्बन्धी कार्यों में ही संलग्न रहते हैं, फिर वे जन्म से चाहे विद्यार्थी हों या श्रमजीवी।"

हमारा देश भी आजकल ऐसी ही परिस्थितियों में होकर गुजर रहा है। सार्वजनिक और राजनीतिक कार्यों में लोग योग्यता और अभ्यास की ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। जो कोई जाति, सम्प्रदाय या किसी प्रकार के स्वार्थ के आधार पर कुछ लोगों को अपना साथी बना लेता है, वही नेता, शासन-संचालक बन बैठता है। इसी के फलस्वरूप हमारे जन-आन्दोलन में इतनी त्रुटियाँ, भ्रष्टाचार दिखाई पड़ता है। यदि सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं को पहले इस कार्य की नियमित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा दी जाय और वे लोग इस कार्य को जीवन का उद्देश्य समझ कर स्थायी रूप से करें तो स्थिति में बहुत कुछ सुधार हो सकता है।

अन्य नेताओं से मत भेद

कुछ समय बाद 'इस्क्रा' को छापने वाले प्रेस ने उसका काम करने से साफ इनकार कर दिया। क्योंकि षडयन्त्रकारी कामों में भाग लेने में उसे खतरा जान पड़ने लगा था। अधिकांश कार्यकर्त्ताओं की सलाह से उसे लन्दन से निकालने का निश्चय किया गया और लेनिन, प्लेखनोव आदि नेता वहीं जाकर रहने लगे इस समय 'इस्क्रा' का प्रभाव रूस में बहुत फैल गया था और सरकार ही उससे न घबड़ा रही थी वरन् अन्य राजनीतिक दलों के नेता भी उसका विरोध करने लगे थे। नर्मदल वाले राजनीतिज्ञों से तो उसका आरम्भ से ही विरोध था, पर अब गर्म विचारों के अन्य क्रान्तिकारी नेता भी उसके इसलिये विरोधी बन गये थे, क्योंकि जनता पर उसका प्रभाव बढ़ता ही जाता था। लेनिन के अन्य सहकारियों को भी ऐसा अनुभव होने लगा कि सर्वसाधारण की सहानुभूति उसकी ओर अधिक है। इन कारणों से क्रान्तिकारियों के दल में वैमनस्य का बीज पड़ गया जो आगे चलकर बहुत बढ़ गया और जिसके कारण लेनिन के कार्यों में बराबर अड़चन पड़ती रही।

इस अनुभव के आधार पर लेनिन ने यही निश्चय किया कि अपने ही कार्यकर्त्ताओं का स्वतन्त्र संङ्गठन हो और पुराने नेताओं से अधिक सम्बन्ध नहीं रखा जाय। क्योंकि जब पुराने नेता किसी नये व्यक्ति को आगे बढ़ते देखते हैं तो उनको अपने प्रभाव के कम पड़ जाने की आशंका हो जाती है और वे उसको हटाने की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कोशिश करने लगते हैं। भारतवर्ष के राजनैतिक क्षेत्र में इस समय जो घोर विशृङ्खलता फैली हुई है और यहाँ की राष्ट्रीय कांग्रेस में जो भयङ्कर दलबन्दी उत्पन्न हो गई है, वह इस बात का बड़ा सुदृढ़ प्रमाण है कि राजनीतिक क्षेत्र की अनुचित महत्त्वाकांक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के पतन का कारण होती है। सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की इस दृष्टि से बहुत सावधान होकर आगे कदम बढ़ाना चाहिये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वास्तव में अनेक नेताओं की तरह लेनिन का उद्देश्य अपनी योग्यता को पुस्तक में लिख देना ही न था। न वह केवल गर्मागर्म भाषण करके लोगों की वाहवाही से सन्तुष्ट होने वाला नेता था। उसने लिखने की मेज पर बैठे हुए जो स्वप्न देखा था, वह उसे निरन्तर आगे बढ़ने को प्रेरित करता रहता था। वह एक ऐसे दल के संगठन की अभिलाषा करने लगा जो उसकी योजना को कार्यरूप में परिणत कर सके। उस समय अत्यन्त साधारण और गरीबी की दशा में रहने पर भी लेनिन एक ऐसी शक्तिशाली संस्था के निर्माण के लिये प्रयत्नशील था जो रूस में उथल पुथल-मचा दे और जारशाही का तख्ता लौट दे। जिस प्रकार संसार के अन्य प्रसिद्ध विजयी योद्धा—सिकन्दर, शिवाजी, नैपोलियन आदि छोटी अवस्था से ही एक विशेष भाव से अभिभूत होकर अपने भावी साम्राज्यों की कल्पना किया करते थे, उसी प्रकार लेनिन भी, जिसने एक बड़ी भारी सल्तनत को लौटने का प्रण किया था, लन्दन के हाईगेट कबरिस्तान में कार्ल मार्क्स की कब्र के पास घण्टों तक बैठकर असीम शक्तिशाली भावी बोल्शेविक दल का स्वप्न देखा करता था। अन्तर इतना ही था कि प्राचीनकाल के योद्धाओं ने देवताओं अथवा ईश्वर का नाम लेकर के तलवार उठाई थी और लेनिन के कार्यक्रम का आधार इतिहास और समाज—शास्त्र को लेकर बनाया था।

सरकारी दमन नीति और उसका प्रत्युत्तर

रूस के सभी प्रधान अधिकारी अत्याचारी और कुटिल नीति के अनुयायी थे और अपने लाभ के लिये खराब काम करने में भी नहीं हिचकिचाते थे। जब लेनिन के प्रचार कार्य के फलस्वरूप मजदूरों में मालिकों की शोषण-नीति और तरह-तरह के अन्यायों के प्रति असन्तोष भड़क उठा तो देश में जगह-जगह आन्दोलन, सभायें, प्रदर्शन हड़तालें आदि होनी आरम्भ हो गईं। जब सरकार इनको सीधी तरह से नहीं रोक सकी तो जार के सलाहकारों ने उसे सलाह दी कि श्रमजीवियों और गरीबों को धर्म के नाम पर भड़का कर यहूदी लोगों से लड़वा देना चाहिये। इसमें उनका ध्यान शासन और सरकारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकमों की बुराइयों की तरफ से हट जायगा और उधर यहूदियों का भी सफाया हो जायगा जिनमें क्रान्तिकारियों और आन्दोलनकारियों की संख्या सबसे अधिक है। जार के ये सलाहकार कितने निरंकुश और अत्याचारी थे इसका नमूना जार के प्रधान सिपहसालार जनरल ट्रैपोन के भाषण के एक अंश से जाना जा सकता है—

"वे आन्दोलन करते हैं, उनको गोली से उड़ा दो। वे बड़ी-बड़ी बातें करते हैं उनको संगीनों से छेद डालो। मजदूर लोग राज्यक्रान्ति करना चाहते हैं, उनमें थोड़े से पुलिस के भेड़ियों को नकली क्रान्तिकारी बनाकर शामिल कर दो और वे तुरन्त ही—तुम्हारे जाल में फँस जायेंगे।"

इस योजना के अनुसार रूस में 'पोगरोम' की सृष्टि की गई। इसके कार्यकर्ताओं को 'ब्लैकहण्डरैड" (कृष्ण घातक) के नाम से पुकारा जाता था। यह लोग ईसाइयों के धर्म चिह्न उठाकर, घण्टा बजाते हुए जलूस बनाकर के निकलते थे और गरीब यहूदियों के घरों में घुसकर उनके तमाम कुटुम्ब को हत्या कर डालते थे और जो कुछ मिलता था उसे लूट लेते थे। दूध पीते बच्चे और स्त्रियाँ भी उनके हाथों से नहीं बच सकती थीं! यद्यपि ये सरकारी नौकर नहीं थे तोभी जार उनकी पीठ ठोंका करता था और उनको राजभक्त बतलाता था, इससे उनके अत्याचार दुगने-चौगुने बढ़ते जाते थे। इससे भी सन्तुष्ट न होकर जार के अन्य मन्त्री ने किसी विदेशी शक्ति के साथ युद्ध छेड़ने की सलाह दी, ताकि जनता का ध्यान उधर आकर्षित हो जाय और इस बीच में क्रान्तिकारी आन्दोलन को खूब कुचल दिया जाय। इसके लिये राज्य अधिकारियों की एक गुप्त कमेटी बनाई गई जिसमें रात भर के वादविवाद के पश्चात् जापान के साथ युद्ध ठानने का निश्चय किया गया।

इस प्रकार एक तरफ रूस के साम्राज्यवादी जारशाही की निरंकुश सत्ता की रक्षा के लिए हर तरह के कूटनीतिक उपायों का अवलम्बन कर रहे थे और दूसरी ओर साम्यवादियों का एक छोटा-सा दल जन साधारण के उद्धार और स्वाधीनता के लिये प्राणपण से कटिबद्ध हो रहा था। क्रान्तिकारियों की छावनी में बैठा हुआ लेनिन सोच रहा था कि किस उपाय से वह एक दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाश हो । पुलिस के थानों और खुफिया पुलिस के दफ्तरों को जलाओ । हमारा उद्देश्य जार की गवर्नमेंट को नष्टभ्रष्ट करके अपनी गवर्नमेंट स्थापित करना है । क्रांति चिरजीवी हो ।

यद्यपि लेनिन इस समय रूस से सैकड़ों कोस की दूरी पर था, तो भी उसने क्रान्ति के पक्षपाती सभी दलों के व्यक्तियों को मिला कर विद्रोह की अग्नि को भड़काने की पूरी कोशिश की । उसकी निगाह किसानों पर भी थी, क्योंकि रूस उस समय तक मुख्य रूप से खेती किसानी का ही देश था । यह बात दूसरे साम्यवादी नेताओं को कम्यूनिज्म के विरुद्ध जान पड़ी, पर लेनिन के कहा कि जब तक हम शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते तब तक कम्यूनिज्म के सब सिद्धान्तों पर पूरी तरह अमल कर सकना सम्भव नहीं है । इस सम्बन्ध में एक बार उसने अपने एक मित्र से कहा था कि उसका विश्वास नैपोलियन की इस उक्ति में है 'पहले कुछ काम करके दिखलाओ, फिर उसके बाद इधर-उधर की बातें करो ।"

जब रूस के शहरों में हड़ताल फैल गई तो रेल तथा तार की व्यवस्था में भी ऐसी गड़बड़ी मच गई कि कहीं आना-जाना अथवा कहीं के समाचार पा सकना बड़ा कठिन हो गया । उस समय की भीषण अवस्था को देख कर यही जान पड़ता था कि अब क्रान्ति होकर सरकार के खण्ड-खण्ड होने में ज्यादा देर नहीं है । यह देखकर लेनिन ने लन्दन में बैठे रहना अनुचित समझा और किसी प्रकार के खतरे की परवाह न करके वह जाली पासपोर्ट की सहायता से पीटर्सबर्ग जा पहुँचा । वह श्रमजीवियों के घरों में छुपकर रहता था और वहीं से अपने साथियों द्वारा आन्दोलन का सञ्चालन करता था । शीघ्र ही उसने पीटर्सबर्ग की 'वर्कर्स सोवीट' (श्रमजीवी पंचायत) पर कब्जा कर लिया । यह 'सोवीट' वास्तव में सरकार के पक्षपातियों ने मजदूरों को नियन्त्रण में रखने के लिए कायम की थी, पर क्रान्ति के प्रभाव से उसकी काया पलट हो गई और अब वह सरकार की शत्रु बन कर हड़ताल का सञ्चालन कर रही थी ।

लेनिन इस सोवीट की कार्यवाही पर बराबर निगाह रखता था । दो बार वेश बदलकर उनके अधिवेशनों में दर्शक के रूप में शामिल भी हुआ ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निरंकुश सत्ता को धूल में मिलायेगा। अपनी उस समय की स्थिति का वर्णन उसने इन शब्दों में किया है, जो प्रत्येक प्रगतिशील कार्यक्रम के अनुयियों के लिये मनन करने योग्य है—

> हमारे छोटे से दल के पुरुष और स्त्रियाँ मजबूती के साथ दूसरे का हाथ पकड़ कर पथरीले और कठिन रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। हम चारों तरफ शत्रुओं से घिरे हैं और प्रायः उनकी बरशती हुई गोलियों के बीच में होकर चलना पड़ता है। हमने स्वेच्छापूर्वक यह प्रतिज्ञा की है कि सदा सम्मुख डटे रहकर शत्रु से युद्ध करेंगे और अपने मार्ग से इधर उधर हटकर पथभ्रष्ट न होंगे।"

सन् १९०५ की क्रान्ति

लेनिन का यह उद्योग सन् १९०५ में रंग लाया। उस समय श्रमजीवी आन्दोलन काफी फैला हुआ था और अनेकों नर्म विचारों के राजनीतिज्ञ भी उसमें भाग लेने लगे थे। इन लोगों ने निश्चय किया कि उग्र आन्दोलन को छोड़कर जार से प्रतिज्ञा की जाय कि प्रजा के संरक्षक के रूप में गरीब मजदूरों के कष्टों को दूर कराने का आदेश दें

२२ जनवरी १९०५ को पीटर्सबर्ग से एक बहुत बड़ा जलूस, जिसमें ५० हजार के लगभग व्यक्ति शामिल थे—जार को एक प्रार्थना पत्र देने उसके महल की तरफ चला। इसके पास धार्मिक झण्डे थे और जार तथा इसाई सन्तों के चित्र थे पर जार के अधिकारियों को इस धार्मिक और शांत जलूस में भी राज्य-द्रोही की गन्ध आई और उन्होंने गोली चलाकर दो सौ व्यक्तियों को मार दिया और एक हजार अधिक घायल हो गये। इस पर पीटर्सबर्ग में दंगा होगया और लाखों मजदूरों ने हड़ताल कर दी! उसी दिन लेनिन के अनुयायिओं ने एक पर्चा बाँटा जिसमें सरकार के कार्य की घोर निन्द करते हुए मजदूरों तथा जनता को हथियार उठाने के लिये प्रेरित किया। उसमें कहा गया था "इस सरकार का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी पार्टी वालों के इनकार कर देने से वह इसके खुले अधिवेशन में तो कुछ बोल नहीं सकता था पर कार्य कारिणी कमेटी में वह बराबर वादविवाद में भाग लेता था। इस प्रकार छुपे रहकर काम करने से किसी बाहरी आदमी को लेनिन के काम का कुछ भी पता नहीं लगता था। ऐसे अवसरों पर ज्यादातर सार्वजनिक कार्यकर्ता ख्याति के लोभ को नहीं रोक पाते और किसी न किसी प्रकार अपने को जाहिर कर ही बैठते हैं, जिससे आन्दोलन की और उनकी भी हानि होती है। पर लेनिन ऐसी यश की लालसा से बहुत ऊँचा उठा हुआ था और वह बराबर एक अंधेरी कोठरी में बैठा हुआ गुप्त रूप से अपना काम करता रहा।

सालभर के बाद जब सरकारी सेनाओं ने क्रान्ति को बहुत कुछ दबा दिया और भूखों मरने के कारण अधिकांश मजदूर भी काम पर लौट गये तो लेनिन पीटर्सबर्ग से हटकर फिनलैण्ड चला गया और दो वर्ष तक वहीं से दूर-दूर के नये स्थानों में विद्रोह कराता रहा। इसी बीच में रूस सरकार की जापान द्वारा भी युद्ध में पराजय हो गई। परिणाम यह हुआ कि सरकार को जनता को सन्तुष्ट करने या कम से कम ऊपर से बहकाने के लिये एक प्रजा-सत्तात्मक शासन-संस्थापक—'डूमा' की स्थापना करनी पड़ी। यद्यपि आरम्भ में तो यह 'डूमा' नाम मात्र की ही शासन-सभा थी क्योंकि इसका कोई भी प्रस्ताव बिना जार की स्वीकृति के अमल में नहीं आ सकता था, पर दस वर्ष बाद इसी ने जार के शासन का अन्त कर देने का एक प्रस्ताव पास किया था।

इस दृष्टि से यह हमारे देश की राष्ट्रीय कांग्रेस से मिलती-जुलती ही थी जिसकी स्थापना कुछ अंग्रेजों ने प्रजा के असन्तोष को नियन्त्रण में रखने के लिये की थी, पर अन्त में उसी ने "अंग्रेजों! भारत को खाली करो" का नारा लगाया और उनके शासन का अन्त करके ही छोड़ा। लेनिन इस प्रकार की व्यावहारिक राजनीति का पूर्ण ज्ञाता था और जब उसके कुछ साथियों ने 'डूमा' की विरोध किया और उसे निरर्थक बतलाया तो उसने अपने अधिक जोशीले साथियों को समझाते हुए कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"मनुष्य को केवल उन शब्दों के पीछे नहीं पड़ा रहना चाहिये। जो किसी समय क्रान्ति के भड़काने के लिए उच्चारण किये गये हों। ऐसे अवसर पर जब कि क्रान्ति दम लेने के लिए ठहर गई हो हमारा कर्तव्य यही है कि हम अगली चढ़ाई के लिये तैयारी करें। इसके लिए हम उन क्रांतिकारी नारों का लगाना बन्द कर दें, जो केवल संग्रामकाल में ही शोभा देते हैं।"

सन् १९१७ की क्रान्ति

जब रूस सरकार ने सैनिक बल से क्रान्ति को कुचल दिया और पच्चीस हजार व्यक्तियों को पकड़ कर साइबेरिया भेज दिया गया और दो हजार को गोली से उड़ा दिया गया तो लेनिन को लाचार होकर फिर विदेश में रहकर आन्दोलन करने की आवश्यकता पड़ी। यद्यपि अपने अनेक सच्चे साथियों के मर खप जाने से वह बड़ा दुःखी था और हर तरह की अधिक कठिनाइयाँ भी उसके सामने थीं पर अपने कर्तव्य पालन से वह पीछे नहीं हट सकता था। इसलिये जब उसके दलने फिर प्रोलीटेरियट' (श्रमजीवी) नामक पत्र को निकालने का निर्णय किया और उसकी व्यवस्था का भार लेनिन को सौंपा गया तो वह फिर जेनेवा आकर उस कार्य को आरम्भ करने में जुट गया।

दूसरी कठिनाई यह थी कि क्रान्ति के असफल हो जाने से आन्दोलन-कारियों में भी मतभेद और फूट फैल गई थी और विपक्षी लोग लेनिन पर आक्षेपों की वर्षा कर रहे थे। पर उसने जिस प्रकार वीरतापूर्वक सरकारी दमन को सहन किया था उसी प्रकार राजनैतिक विरोधियों के वाक्य-बाणों को भी सहन कर रहा था। उसका विश्वास था कि यदि वह सचाई के साथ कर्तव्य-मार्ग पर डटा रहेगा तो अन्तिम विजय उसी की होगी। वह अपने साथियों को भी इस प्रकार के उद्गारों से उत्साहित किया करता था—"निराश मत हो। यह अन्धकार अवश्य दूर होगा और कुछ ही वर्षों में फिर श्रमजीवी क्रान्ति का बाल-रवि चमकने लगेगा।"

निस्सन्देह ये चार-पाँच वर्ष लेनिन के जीवन में सबसे अधिक दुःखदायी और शोचनीय थे। वह पिंजरे में पड़े शेर की तरह इधर-उधर करवट बदलता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था और उसकी अटूट शक्ति निकम्मी पड़ी थी । रह-रहकर उसके भीतर काम करने का भाव जोर मारता था, पर उसके लिए कोई साधन मौजूद न था । तो भी उस कठिन समय में उसने क्रान्ति के झण्डे को बराबर ऊँचा उठाये रखा और किसी स्वार्थी या नीच प्रकृति के व्यक्ति के हाथों उसे कलङ्कित न होने दिया । ऐसे ही अवसरों पर असली और नकली नेताओं की परीक्षा हुआ करती है ।

इस परीक्षा काल में लेनिन की पत्नी क्रुप्सकाया सदा लेनिन के साथ रही, जहाँ वह गया उसके साथ गई और प्रत्येक कार्य में उसका हाथ बँटाती रही । यद्यपि वह एक सुशिक्षित और सुन्दर रमणी थी, पर इन दिनों सब प्रकार के अभाव सहन करती हुई अत्यन्त सादगी का जीवन बिताती थी । वह सस्ते दाम के मामूली कपड़े पहनती थी और देखने में किसी रूसी मजदूर की स्त्री के समान जान पड़ती थी । उसे भोग विलास और सुख की आकांक्षा न थी और उसने जीवन भर लेनिन के साथ सब प्रकार के कष्ट तथा खतरा उठा करके श्रमजीवी आन्दोलन की अमूल्य सेवा की । जब उसका पति रूस जैसे महा-साम्राज्य का डिक्टेटर बन गया तब भी वह उसी प्रकार सादगी से रहती थी, वैसे ही सादे वस्त्र पहिनती थी । श्रमजीवी आन्दोलन के सिवा वह राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार में भी बड़ा अनुराग रखती थी और इस सम्बन्ध में उसने बहुत काम किया है ।

योरोपीय महायुद्ध और लेनिन

सन् १९१४ में जब योरोपियन महायुद्ध आरम्भ हुआ तो लेनिन ने यह अवसर पुनः श्रमजीवी—संगठन को पुख्ता बनाने के लिये उपयुक्त समझा और वह रूस के भीतर अपने अनुयायियों द्वारा प्रचार कार्य कराने लगा । सन् १९१५ में स्वीजरलैण्ड में सब देशों के साम्यवादी नेताओं की एक कानफ्रेन्स हुई जिसमें लेनिन ने महायुद्ध को पूँजीवादियों का एक अस्त्र बतलाकर जगह-जगह गृहयुद्ध कराने का प्रस्ताव किया । इस पर फ्रांस के नेता लैण्डेकर ने आक्षेप करते हुए कहा था कि "यहाँ विदेश में बैठकर गृह-युद्ध की बातें करना सहज है, पर जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रूस में रहकर ऐसी बातें करते तब तारीफ की बात होती ।'' लेनिन ने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया—''जब कालमार्क्स ने कम्यूनिस्ट मैनीफैस्टो लिखा तो वह विदेशों में ही रहता था, पर इसके लिये ओंधी तबियत के व्यक्ति ही उसकी निन्दा कर सकते हैं । मैं आज विदेश में इसलिये निवास कर रहा हूँ, क्योंकि रूसी श्रमजीवियों ने मुझे यहां पर भेजा है, पर जब समय आयेगा तो दुनिया देखेगी कि मैं और मेरे साथी कर्तव्य पालन से पीछे हटने वाले तो नहीं हैं ।

रूस में राज्यक्रान्ति

फरवरी १९१७ में जब जार के कुशासन के कारण रूस में विद्रोह का जोर बढ़ा और जार को राज्य सिंहासन से हटा दिया गया, तो अपने कथनानुसार लेनिन जल्दी-जल्दी रूस पहुँचा । आरम्भ में श्रमजीवी नेता के रूप में उसका बड़ा स्वागत किया गया, पर जब उसने युद्ध बन्द करके श्रमजीवी शासन कायम करने का प्रचार करना आरम्भ किया तो शासक दल उसका विरोधी बन गया । १६ जुलाई को क्रान्सटेड की समुद्री सेना ने विद्रोह कर दिया और टोरिडा पैलेस को घेर लिया जिसमें सरकार की कार्यकारिणी कमेटी का अधिवेशन हो रहा था । चूंकि इस विद्रोह में लेनिन का भी हाथ था इसलिये उसके विरुद्ध वारेन्ट निकाला गया और उसकी गिरफ्तारी के लिये दो लाख रुबल का इनाम घोषित कर दिया गया । इस लिये लेनिन पैट्रोग्राड के पास एक गाँव में जाकर रहने लगा और किसान का वेष बनाकर फसल काटने और ढोने का काम करने लगा । जब पुलिस की सरगर्मी बहुत बढ़ गई और वहाँ भी खतरा जान पड़ने लगा तो वह फिर से नकली बाल लगाकर और बेष बदल कर फिनलैण्ड चला गया ।

पर इस बीच में उसने काम कभी बन्द नहीं किया । फिनलैण्ड में वह एक पुलिस अफसर के घर में ठहरा जो उसके दल का सदस्य था । वह अफसर प्रतिदिन स्टेशन जाकर पैट्रोग्राड से निकलने वाले सब अखबार खरीद कर ले आया करता था और लेनिन उनको पढ़कर रात में अपने दल के अखबार के लिये एक लेख तैयार कर देता था जिसमें लोगों को आगे के कार्यक्रम का सुझाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिया करता था। जब रूस की दशा और भी गम्भीर हो गई और युद्ध में हार पर हार होने से वहाँ की सरकार की स्थिति डांवाडोल होने लगी तो लेनिन फिनलैण्ड की राजधानी के एक छोटे कस्बे में आ गया, जो रूस की सीमा के बिल्कुल निकट था।

अब लेनिन की सम्मति में वह समय आ गया था जब कि श्रमजीवी दल को अपनी सङ्गठित शक्ति का प्रयोग करके रूस की अस्थायी सरकार का तख्ता पलट देना चाहिये। इस अस्थायी सरकार में नर्म विचारों के राजनीतिज्ञ और पूँजीवादियों से समझौता करने वाले समाजवादी लोग शामिल थे और उनका शासन बहुत कमजोर था इसलिये अब रूस के पूँजीवादी सेना को अपनी तरफ मिलाकर उस सरकार को हटाकर अपना सैनिक शासन कायम कर लेना चाहते थे जिससे क्रांतिकारी श्रमजीवियों को दबाया जा सके। लेनिन ने योजना बनाई कि पूँजीवादियों को इस चाल के सफल होने से पहले श्रमजीवियों को शासन पर अधिकार कर लेना चाहिए। उसके दूसरे साथी ही स्थिति को अच्छी तरह न समझ सकने के कारण हिचकिचाने लगे और इस योजना को आगे के लिये टालने का विचार करने लगे।

यह देखकर लेनिन सब तरह के खतरे का डर छोड़कर अपने छुपने की जगह से बाहर निकल आया और सीधा पैट्रोग्राड पहुँचा। उस समय सरकार उसकी गिरफ्तारी के लिये वारन्ट पर वारन्ट निकाल रही थी। पर इसकी कुछ भी चिन्ता न करके वह अपनी पूरी ताकत से विद्रोह खड़ा करने की कोशिश करने लगा। जो लोग आगा-पीछा कर रहे थे उनके साथ वादविवाद करके, जो डरते थे उनको साहस दिलाकर और साधारण जनता को गरमा-गरम लेखों द्वारा उत्साहित करके वह जोर-शोर से सुधारवादियों की सरकार को लौटने का आन्दोलन करने लगा। उसने अपने दल वालों को अच्छी तरह समझा दिया कि यदि तुम शासन पर अधिकार जमाने में एक सप्ताह की भी देर कर दोगे तो फिर तुम्हारे करे-धरे कुछ न होगा और पूँजीवादियों की हाथों कुत्ते की मौत मारे जाओगे। इसके बजाय अगर तुम इस समय थोड़ी भी कोशिश करोगे तो शासन सत्ता तुम्हारे हाथ आ जायेगी। बाद की घटनाओं ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध कर दिया कि लेनिन का निर्णय बिल्कुल ठीक था और रूस में बोलशेविक शासन स्थापित हो सकने का वास्तविक श्रेय उसी को है।

रूसी क्रांति को लेनिन ने किस प्रकार अपना सर्वस्व होमकर खड़ा किया और कार्यरूप में परिणत हो जाने पर किस प्रकार प्राणों की बाजी लगाकर उसकी रक्षा की—यह रूसी इतिहास की अमर गाथा है। शासन-सत्ता ग्रहण करने के कुछ ही दिनों बाद जर्मन सेना के आक्रमण से रूस की रक्षा करने की समस्या उपस्थित हो गई। उस समय अन्य नेता तो भावुकतापूर्ण भाषण करके जर्मनी से सन्धि करके अपनी पराजय स्वीकार करने को बहुत बुरा बतलाते थे, पर लेनिन ने कहा कि हमारी क्रांति जीवित रहेगी तो हम वर्तमान हानि का बदला आगे चलकर चुका लेंगे। पर यदि हम इस बिना तैयारी की हालत में शत्रु से भिड़ गये तो फिर रक्षा का कोई उपाय नहीं है। इसलिये लेनिन ने अपने सिर पर जिम्मेदारी लेकर जर्मनी को सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। रूसी साम्राज्य का कुछ प्रदेश जो जर्मनी की सीमा से लगा था उसको दे भी दिया। फिर वह जर्मनी के खतरे से बचने के लिए अपनी राजधानी को पैट्रोग्राड से मास्को ले गया। इन सब कारणों से उसके बहुत से साथी भी उसके विरोधी बन गये और एक दिन कुछ मजदूर बन्दूक-पिस्तौल लेकर उससे जबावतलब करने कार्यालय में भी पहुँच गये। पर अन्त में लेनिन की सचाई और उचित निर्णय के लिये सबको उसके सामने नतमस्तक होना पड़ा।

श्रमजीवी क्रांति की रक्षा करने के कार्य में लेनिन की जान सदा खतरे में रहती थी। क्रांति के डेढ़ महीने बाद ही दिसम्बर १९१७ में उसकी मोटर पर कई गोलियाँ चलाई गयीं जिनसे एक साम्यवादी नेता घायल हो गया। इसके बाद भी कई बार उसे मारने की कोशिश की गई। अन्त में अगस्त १९१८ में एक लड़की प्रार्थना-पत्र देने के बहाने उसके पास पहुंची और अकस्मात् पिस्तौल से तीन गोलियाँ चला दीं, जिनसे घायल होकर वह फर्श पर गिर गया। यद्यपि डाक्टरों के प्रयास से उसकी जान बच गई पर उसका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया। इसके बाद भी वह बोलशेविक शासन की रक्षा के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देशी और विदेशी शत्रुओं से जूझता रहा जिसमे क्रान्ति की रक्षा तो हो गई पर उसका स्वास्थ्य दिन पर दिन कमजोर पड़ता गया और २१ जनवरी १९२३ को उनका देहान्त हो गया।

जैसे कहा जाता है कि मनुष्य के वास्तविक महत्त्व का पता उसकी मृत्यु के बाद ही लगता है, जब कि वह संसार के रङ्गमञ्च पर से उठ जाता है और केवल उसके नाम तथा कारनामे पक्ष और विपक्ष के सामने निर्णय करने के लिए रह जाते हैं। यही बात लेनिन के सम्बन्ध में देखने में आई। जो लोग दलबन्दी और मतभेद के कारण उसे 'लुटेरा' और 'जर्मन जासूस' के सिवाय और किसी नाम से पुकारने को राजी न थे, वे उसे शोषित जनता का मसीहा बतलाने लगे। कार्लकौटस्की और ओटो बौर जैसे सुप्रसिद्ध साम्यवादी नेताओं ने, जो सदैव बोलशेविज्म का विरोध करते रहे थे, लेनिन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। उन्होंने स्वीकार किया कि "लेनिन श्रमजीवी दल का सच्चा नेता और शिक्षक था।" कई पूँजीवादी नेताओं ने उसके असाधारण गुणों की चर्चा करते हुए कहा—"यद्यपि लेनिन का मार्ग हमसे भिन्न था तो भी इसमें सन्देह नहीं कि उसकी राजनीतिज्ञता, दृढ़ निश्चय और अगाध ज्ञान की तुलना मिल सकना कठिन है।'

प्रसिद्ध मानवतावादी विद्वान् रोमारोलाँ ने लिखा है—"लेनिन वर्तमान शताब्दी का सबसे बड़ा कर्मठ और साथ ही स्वार्थत्यागी व्यक्ति था। उसने आजीवन घोर परिश्रम किया पर अपने लिये कभी किसी प्रकार के लाभ की इच्छा नहीं की।" विश्व शान्ति के महान् प्रचारक—बरट्रैण्ड रसल ने कहा—"लेनिन की मृत्यु से एक सच्चा महापुरुष संसार से उठ गया। संसार के पूँजीवादियों की दृष्टि में तो वह केवल एक विध्वंसकारी ही था पर उसे महापुरुष की पदवी विध्वंस के लिए नहीं दी गई है। वह एक महान् निर्माणकर्ता, दार्शनिक और विधायक भी था। मुझे तो वह एक अत्यन्त ईमानदार और अहङ्कार से शून्य व्यक्ति जान पड़ा।"

सच है निःस्वार्थ भाव से जनकल्याण के लिये किये गये कार्यों का परिणाम अन्त में अपने और दूसरों के लिये मंगलजनक ही सिद्ध होता है। हमारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यहाँ भी अनेक जन-सेवकों को समय-समय पर लोगों के विरोध और निन्दा का पात्र बनना पड़ा, पर अन्त में आलोचकों ने अपनी भूल समझली। गाँधीजी और लो० मा० तिलक जैसे लोकोत्तर व्यक्ति भी विरोधियों के आक्रमण और आक्षेपों से न बच सके पर एक दिन आया जब वास्तविकता प्रकट हुई और लोग उनको देवताओं की तरह पूजने लगे। इससे हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सेवा-भावी मनुष्य को परोपकार और सेवा-मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलते रहना चाहिये, चाहे गैर जिम्मेदार अथवा अज्ञानी व्यक्ति उसके विषय में कैसी भी भली बुरी चर्चा क्यों न करते रहें। हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही यह कह दिया गया है—'सेवा-धर्म परम गहनो योगिनामप्यगम्य।" इसका आशय यही है कि सच्चे भाव से सेवा करने वालों को उनकी सचाई का प्रतिफल प्रायः विरोध और हानि के रूप में मिला करता है। इसलिये उनको चाहिये कि वे अपना चित्तवृत्ति को योगियों की तरह अपने लक्ष्य पर ही संलग्न रखें और इधर-उधर को भ्रमोत्पन्न कराने वाली बातों पर ध्यान न दें। अन्त में दूध का दूध और पानी का पानी सबके सामने आ जाता है।

लेनिन का समस्त जीवन कर्तव्यपरायणता और जन-सेवा का एक ऐसा ज्वलन्त उदाहरण रहा कि रूस के अनेक भोले भाले निवासियों ने उसकी मृत्यु पर विश्वास ही नहीं किया। खासकर उनके शव को वैज्ञानिक विधियों द्वारा कांच के कमरे में सुरक्षित रख दिये जाने और नित्यप्रति उसके दर्शनों के लिये हजारों व्यक्तियों के आते रहने ने ऐसे लोगों में यह किम्बदन्ती फैल गई कि लेनिन वास्तव में अभी मरा नहीं है, वरन् मरने का बहाना करके किसी औषधि द्वारा मुर्दा बनकर बैठा हुआ है। वह देखना चाहता है कि लोग उसके पीछे कैसा शासन-संचालन करते हैं और जनता के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? पर एक दिन वह अवश्य उठ बैठेगा और अपने साथियों के साथ मिलकर काम करेगा। यद्यपि इन भोले आदमियों की यह धारणा निराधार और एक कल्पना ही है, पर तात्विक दृष्टि से देखा जाय तो सच्चे महान् व्यक्ति कभी मरा नहीं करते जब तक उनके काम अमर रहते हैं। लेनिन ने समाजवाद—जनता का हित-साधन करने वाले शासन—का बीजारोपण किया वह आज दिन पर दिन बढ़ रहा है और फलफूल रहा है।

मुद्रक:—युग-निर्माण प्रेस गायत्रीतपो भूमि मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org